आलोचनात्मक

प्रश्न :- डेविड ईस्टन के संदर्भ में सामान्य व्यवस्था सिद्धांत की व्याख्या करें ?

III

उत्तर :- सामान्य व्यवस्था सिद्धांत के बीज 1920 के दशक में लुडविग-वॉन-बर्टालेन्फी (General System-1956) के चिन्तन में परिलक्षित होते हैं। यद्यपि वह व्यवहारवादी नहीं था। वह केवल जीव वैज्ञानिक था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इस सिद्धांत का प्रभाव अनुभूत हुआ और यह कोशिश हुई कि किसी नये संप्रत्यय खोजने की कोशिश करनी चाहिए जो हमारे विभिन्न अनुशासनों के अध्ययन और अनुसंधान को एकत्व प्रदान कर सके और जो किसी घटना विशेष को समझने के लिए हमें सैद्धान्तिक अन्तर्दृष्टियाँ दे सके।

व्यवस्थाओं की संकल्पना सामान्य व्यवस्था सिद्धांत का केन्द्रीय और निदेशक विचार है। व्यवस्था किसे कहते हैं ? व्यवस्था के अर्थ पर गंभीर मतभेद होने के कारण कोई सर्वसम्मत परिभाषा की खोज मुश्किल है। मसलन, लुडविग वॉन-बर्टालेन्फी ने General System, 1956 में बताया "बहुत से ऐसे तत्वों का एक साथ पाया जाना जिनका एक दूसरे के साथ क्रिया प्रतिक्रिया का सम्बन्ध हो।" (System is set of elements standing to interaction) हॉल एवं फ़ैगन ने "Defination of a system" 'General System' में बताया कि "विभिन्न वस्तुओं का ऐसा संकलन जिनके उद्देश्यों और गुणों में निकट का सम्बन्ध हो।" (System is a set of relations between the objects and their attitudes) कौलिन चेरी ने On Human Communication, 1961 में बताया "एक ऐसी सम्पूर्ण इकाई जो अनेक भागों से मिलकर बनती है- और अनेक गुणों का मिश्रण है।"

इन सभी परिभाषाओं से केवल यही संकेत मिलता है कि अमूर्तन के बहुत ऊँचे स्तर पर विद्वानों में केवल इतनी सहमति दिखाई देती है कि व्यवस्था किन्ही वस्तुओं या अवयवों का वह समूह है जिनमें वस्तुओं या अवयवों का एक दूसरे के साथ कोई संरचनात्मक सम्बन्ध होता है।

व्यवस्था में तीन गुण पाये जाते हैं :-

(i) व्यापकता - इसका अर्थ है कि व्यवस्था के अन्तर्गत हम सभी परस्पर क्रियाओं को शामिल करते हैं। इसमें हम विधि पर आधारित अंग के साथ समस्त संरचनाओं को उनके राजनीतिक रूप में शामिल करते हैं, जैसे- जाति, धर्म, परिवार आदि।

(ii) अन्योन्याश्रय :- अन्योन्याश्रय का अर्थ है कि जब व्यवस्था के एक अंग के गुणों में परिवर्तन आता है तो उसका प्रभाव अन्य संघटकों पर भी स्वतः पड़ता है। जैसे- मानव शरीर

(iii) सीमाएं :- सीमाओं से तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यवस्था किसी एक बिन्दु से प्रारंभ होती है तथा किसी एक निश्चित स्थान पर उसका अन्त होता है।

व्यवस्था सिद्धांत जीव विज्ञान से मानव विज्ञान और समाजशास्त्रों के मार्गों द्वारा सामाजिक विज्ञानों में प्रवेश किया। सामाजिक विज्ञानों में व्यवस्था सिद्धांत का पहला बड़ा प्रभाव हमें 1922 में दिखायी देता है जब मनोविज्ञान के दो विद्वान ब्रोनिसलॉ मालीनावोस्की और रेडक्लिफ ब्राउन की पुस्तकें "एर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पैसिफिक" और अण्डमन आईलैण्डर्स एक साथ प्रकाशित हुई।

राजनीतिशास्त्र के क्षेत्रों में जिन राजनीतिशास्त्रियों ने इस सिद्धांत में महत्वपूर्ण काम किया, वे हैं - राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में डेविड ईस्टन और गेब्रियल आमण्ड और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में मॉर्टन कैप्लान।

~~[illegible]~~ लुड विग वान बर्टालेन्फी ने

General System ~~1956~~ लिखी।

सामान्य व्यवस्था सिद्धांत की व्यापक संकल्पनाओं को अपेक्षाकृत
को तीन भागों में बांटा जा सकता है

~~सामान्य व्यवस्था सिद्धांत की व्यापक रूपरेखा विकसित की जाती संकल्पनाओं को~~

तीन भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में हम उन संकल्पनाओं को ले सकते हैं जो एक प्रकार की व्यवस्था के बीच के अन्तर को स्पष्ट करती है। जैसे - खुली व्यवस्थाओं (Open system) और बन्द व्यवस्थाओं (closed system) अथवा जैविक (organismic) और अजैविक (inorganism) व्यवस्थाओं के बीच के अन्तर को। इसी विवरणात्मक ढंग की संकल्पनाओं के आधार पर हम व्यवस्थाओं के आन्तरिक संगठन की प्रक्रियाओं को यह पता लगाने की दृष्टि से कि उसमें सादृश्य, विभिन्नता, अन्तर्निर्भरता अथवा केन्द्रीकरण का मात्रा कितनी है - समझने का प्रयत्न कर सकते हैं। व्यवस्थाओं की पर्यावरण के साथ अन्तः क्रियाओं के सम्बन्ध में सीमा, निवेश (input) और निर्गत (output) आदि की संकल्पनाएँ आ जाती है।

(2) दूसरे भाग की संकल्पनाओं की सहायता से हम यह समझने का प्रयत्न कर सकते हैं कि कौन से तत्व विभिन्न व्यवस्थाओं के नियंत्रण और अनुरक्षण के लिए उपयोगी है। यहाँ हम स्थिरता (stability), संतुलन (equilibrium) और समस्थिति (Homeostasis) की संकल्पनाओं से परिचित होते हैं। व्यवस्थाओं के नियंत्रण और अनुरक्षण के सम्बन्ध में हमारे सामने और कई संकल्पनाएँ आती है जिनका सम्बन्ध प्रक्रियात्मक परिवर्तनों से है - जैसे, प्रति सम्भरण (Feed back) और उसके विभिन्न स्वरूप, पुनर्निर्माण और पुनः गठन और निः सरता (entropy) आदि के विचार।

तीसरे भाग में वे संकल्पनाएँ आती है जिनका सम्बन्ध परिवर्तन अथवा गत्यात्मकता से है। परिवर्तन दो प्रकार का हो सकता है, एक ऐसा जो व्यवस्था को हानि न पहुँचाता हो और दूसरा जिसमें उस पर आघात किया गया हो। ऐसा परिवर्तन जिसमें जिससे व्यवस्था को हानि न पहुँचती हो, पर्यावरण की बदली हुई परिस्थिति की प्रतिक्रिया के रूप में लाया जा सकता है। इस प्रकार के परिवर्तन दो प्रकार के हो सकते है - जो बदले जा सके और बदले न जा सके - इस स्थिति में हमारा सामूहिक अनुकूलन (adaptation); अधिगम (learning) और विकास (growth) की संकल्पनाओं से होता है। इस प्रकार के परिवर्तनों के सम्बन्ध में हम व्यवस्थात्मक उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं प्रयोजनों का अध्ययन कर सकते हैं।

डेविड ईस्टन (The Political System, An Inquiry of Pol. Science, 1953) पहला राजनीतिशास्त्री था जिसने व्यवस्था विश्लेषण उपागम के आधार पर राजनीति के अध्ययन के लिए उसे मानव विज्ञान अथवा समाजशास्त्र से उधार न लेने के बदले एक स्वतंत्र व्यवस्थित संरचना का विकास किया। इसने राजनीतिक व्यवस्था को विश्लेषण की मूल इकाई के रूप में, और विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं के पारस्परिक व्यवहार को शोध के प्रमुख क्षेत्र के रूप में चुना है। व्यवस्था विश्लेषण के प्रयोग के सम्बन्ध में इसका दृष्टिकोण 'रचनात्मक' है, इस अर्थ में कि इसने व्यवस्था को संरचनाओं के रूप में नहीं, बल्कि प्रक्रियाओं के संजाल के रूप में लिया है। राजनीतिक जीवन के सम्बन्ध में (A System analysis of Pol. life) ईस्टन की मान्यता है कि "एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है, अन्तःक्रिया जो पर्यावरण से [illegible] व्यवहार की एक प्रभावित होता रहता है और स्वयं पर्यावरण को प्रभावित करता है, [illegible] जाता है।" इसका यह अर्थ हुआ कि राजनीतिक व्यवस्था के बाहर और उसके पार दूसरी व्यवस्थाएँ, अथवा पर्यावरण हैं - भौतिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक आदि - जो अन्य व्यवस्थाओं से राजनीतिक व्यवस्था की भिन्नता को स्पष्ट करते हैं। ईस्टन ने लिखा है कि राजनीतिक व्यवस्था "किसी भी समाज में अन्तःक्रियाओं की एक ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से बाध्यकारी अथवा आधिकारिक निर्णय लिये जाते हैं।" अर्थात, "राजनीतिक व्यवस्था अन्तर क्रियाओं का ऐसा समूह है जिसके अन्तर्गत मांगो (Demands) को निर्गत (Out put) में बदला जाता है।" राजनीतिक व्यवस्था संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का एक जटिल समूह है जो समाज के भीतर आधिकारिक मूल्यों का विनियोजन करती है। हम राजनीतिक व्यवस्थाओं का अध्ययन इसलिए करते हैं क्योंकि उनके अधिकारपूर्ण निर्णय (Authoritative decisions) के परिणामों का समाज के लिए बहुत महत्व है और इन परिणामों को निर्गत (Out put) कहा जाता है। किसी भी व्यवस्था को जीवित रखने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें निरन्तर निवेश (input) होता रहे। निवेश के बिना कोई भी व्यवस्था कार्य नहीं कर सकती। निवेश के बिना उसके कार्यों को समझा-पहचाना नहीं जा सकता।

(+) १२ ईस्टन का राजनीतिक व्यवस्था प्रतिमान :-

(Input) निवेश प्रकार :- निवेश से तात्पर्य माँग (Demands) और समर्थन (Supports) से है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के सामने पर्यावरण से कुछ माँगे रखी जाती हैं। इन माँगो के पीछे माँग रखने वालों का समर्थन होता है जो राजनीतिक व्यवस्था में निर्णय लेने वालों का ध्यान उन माँगो की ओर आकर्षित करता है। इसके साथ ही साथ 'समर्थन' राजनीतिक व्यवस्था को विभिन्न प्रकार की माँगो से निपटने की शक्ति भी प्रदान करता है क्योंकि राजनीतिक व्यवस्था का अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसे जनता का कितना समर्थन प्राप्त है। यह समर्थन उसकी माँगो की पूर्ति की क्षमता पर निर्भर करता है। माँगे हमें यह समझने में सहायता करती है कि किस तरह पर्यावरण सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर अपना प्रभाव डालता है क्योंकि माँगो का जन्म सामाजिक पर्यावरण में होता है। माँगो की वैधता, व्यवस्था की क्षमता तथा स्थायित्व को समझने में समर्थन सहायता करता है।

Demands - माँगे — माँगे मन की अभिव्यक्ति है जिसके द्वारा किसी वस्तु विशेष के Allocation के लिए, उन लोगों से जो कि इसको करने के लिए उत्तरदायी कहा

Scanned with CamScanner

जाता है कि ऐसा होना चाहिए या नहीं होना चाहिए। माँगे कई प्रकार की हो सकती है — संकीर्ण, विशिष्ट तथा सामान्य। माँगो की अपनी एक निर्दिष्ट दिशा होती है। उनका बहाव सदैव सत्ता की ओर होता है। माँगो के दो रूप होते है - सुझाव तथा निर्देश। माँगे दो प्रकार की होती है — स्पष्ट तथा अस्पष्ट। माँगे वैयक्तिक स्वार्थ तथा जनहित दोनो से सम्बन्धित हो सकती है।

समर्थन (Support) — राजनीतिक व्यवस्था कुछ कार्य करती है। कार्य करने के लिए समर्थन का होना बहुत ही आवश्यक है। समर्थन एक महत्वपूर्ण निवेश है जिसके होने या न होने से महत्वपूर्ण परिणाम निकलते है। बिना समर्थन के माँगो का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता है। समर्थन एक ऐसी कड़ी है जो राजनीतिक व्यवस्था को पर्यावरण से जोड़ती है। बिना समर्थन के शासन में स्थिरता नहीं आ पाती। सामाजिक एकता बनाये रखने के लिए समर्थन आवश्यक है। (शेष नीचे वाले पैरा में)

निर्गत प्रकार्य (out put) :- निर्गत से उत्पादित वस्तुऐं है जो निवेश के रूपान्तरण के बाद प्राप्त होती है। निवेश को समर्थन द्वारा सूत्रबद्ध करके व्यवस्था के सामने निर्णय लेने के लिए रखा जाता है। राजनीतिक व्यवस्था विभिन्न प्रकार के निवेशो पर निर्णय लेती है। निर्गत व्यक्तियों द्वारा रखी गयी माँगो पर राजनीतिक व्यवस्था का निर्णय है।

पुनर्निवेशन (Feed back) — निर्गत का उद्देश्य सदस्यो की आवश्यकता को पूरा करना होता है। व्यवस्था को निर्गत से सदस्यों की आवश्यकता पूरी हुई या नहीं, जनता की इस सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया है, इस सम्बन्ध में जो सूचनाऐं अधिकारीगणो के पास आती है, उसे पुनर्निवेशन कहते है। ईस्टन की धारणा है कि पुनर्निवेशन राजनीतिक व्यवस्था की वे प्रक्रियाऐं है जो व्यवस्था के भावी समायोजन के लिए उसको विद्यमान धारणाओं के ज्ञान का लाभ प्राप्त करने योग्य बनाती है।

राजनीतिक व्यवस्था के भीतर सम्पादित होने वाले सभी कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य Feedback loop का है, क्योंकि इसके द्वारा सम्पादित कार्य की प्रक्रिया से राजनीतिक कार्यों का चक्र संचालित होता है।

पर्यावरण (environment) — राजनीतिक व्यवस्था सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में अन्य उपव्यवस्थाओं (आर्थिक, धार्मिक) की तरह एक उपव्यवस्था की भूमिका अदा करती है। इसके पर्यावरण से आंशिक रूप से इसकी सहयोगिनी उपव्यवस्थाओं का बोध होता है जिन्हे आन्तरिक सामाजिक पर्यावरण (Inter-societal environment) की संज्ञा दी गयी है। आन्तरिक सामाजिक पर्यावरण को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक व्यवस्था वातावरण (ecology) जैविक तत्व तथा समाज की पद्धतियों द्वारा प्रभावित होती है।

(समर्थन का शेष) :- राज व्यवस्था की तीन विशिष्ट वस्तुओं के प्रति समर्थन होता है :-

(i) राजनीतिक श्रम विभाजन पर आधारित, राजनीति समुदायों के सम्बन्ध में।

(ii) राजव्यवस्था के आधारभूत मूल्यों, राजनीतिक संरचना तथा मानको के प्रति।

(iii) किसी निर्दिष्ट समय पर शक्ति धारण करने वाले राजनीतिक शक्तियों के प्रति।

(2) ईस्टन द्वारा निर्दिष्ट राजनीतिक विश्लेषण की इस पद्धति में दो बड़े स्पष्ट लाभ हमें दिखायी देते है। एक तो यह है विश्लेषण की यह पद्धति संतुलन की दृष्टिकोण से आगे जाती है और व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन

निर्गत दो प्रकार के होते है (i) प्रथम को सत्तात्मक या आधिकारिक निर्गत कहते है (ii) दूसरे प्रकार निर्गत, असत्तात्मक के निर्गत या असत्तात्मक या अनाधिकारिक होते है

और उसकी गतिशीलता को भी ध्यान में रखती है। रुकावट, दबाव का नियंत्रण उद्देश्यपूर्ण निर्देशन आदि ऐसी संकल्पनाएँ हैं जो हमें व्यवस्थाओं की प्रक्रियाओं की गतिशीलता का विश्लेषण करने में सहायता पहुँचाती हैं।

इस पद्धति का दूसरा महत्वपूर्ण लाभ तुलनात्मक राजनीति विश्लेषण के क्षेत्र में है। ईस्टन द्वारा प्रस्तुत की गयी वैचारिक संरचना में संकल्पनाओं और संवर्गों का एक सुन्दर एवं सुगायोजित समुच्चय है, जो तार्किक दृष्टि से अकाट्य है और जिनकी सहायता से समस्त राजनीतिक व्यवस्थाओं पर एक तुलनात्मक विहंगावलोकन के लिए काफी सुविधा हो गयी है।

(+) आलोचना :-

① ईस्टन का प्रारूप (model) केवल द्वितीयस्तर के परिवर्तनों का ही विश्लेषण कर सका है। इसके क्रांतिकारी परिवर्तनों, वृद्धि (Growth) पतन (Decline), Downfall Disruption आदि परिवर्तनों व घटनाओं का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

② ओरन यंग (System of Pol. science, 1968) के अनुसार ईस्टन की व्यवस्था की निरन्तरता अथवा सततता का उद्देश्य, व्यवस्था के उत्तरजीवन, अनिवार्य परिवर्त्यों के क्रान्तिक सीमान्तर में परिरक्षण व उन्हें प्राप्त कराने वाले मूल्यों व साधनात्मक प्रक्रियाओं के साथ सम्बद्ध है। इस प्रकार ईस्टन की व्यवस्था सततता की सीमाओं से आगे नहीं जा सकती।

③ जहाँ तक उसके निवेश-निर्गत प्रारूप की व्यावहारिकता का सम्बन्ध है, अभी तक उसको राजनीतिक शोध में प्रयुक्त नहीं किया गया है, इस कारण इस समय उसकी सफलता और असफलता के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

④ ईस्टन के सिद्धांत जैसा कि उसने कहा है, राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्थाओं पर आधारित हैं, तथापि उसने अनेक राजनीतिक प्रघटनाओं (Phenomenon) पर विचार नहीं किया है। ईस्टन के सिद्धांत में व्यक्तियों, व्यक्ति समूहों तथा व्यक्ति कार्यों को भी उपयुक्त स्थान प्राप्त नहीं हो सका है।

⑤ इसके अतिरिक्त उसके सिद्धांत में विभिन्न दोष जैसे - यथास्थितिवादिता औपचारिकता और बुद्धिवादिता का भी समावेश हो गया है। उसने सूचीकरण पर अत्यधिक बल दिया है। इसका बुरा परिणाम यह हुआ कि उसकी राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप Distort (विद्रूप) हो गया है।

वास्तविकता यह है कि व्यवस्था विश्लेषण करते समय ईस्टन भी वह भूल करता है जो कि अक्सर प्रकार्यवादी कर बैठते हैं। वह पुनः राजनीतिक अन्तःक्रियाओं को व्यवस्था के सदस्यों से प्रतिस्थापित कर देता है।

फिर भी ईस्टन के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। उसे राजनीति में व्यवस्था विश्लेषण के प्रतिपादन करने का श्रेय प्राप्त है। इस सिद्धांत के अन्तर्गत उसने अनेक उपयोगी धारणाएँ विकसित की हैं। उसका प्रयास सदैव ही राजनीतिक जीवन के व्यवहार व्यवस्था का सामान्य सिद्धांत बनाने की दिशा में रहा है। लेकिन ईस्टन का व्यवस्था सिद्धांत में संरचनात्मक कार्यात्मक विश्लेषण की भाँति व्यापकता होने के

Scanned with CamScanner

बावजूद इस पर अगतिशीलता का आरोप नहीं लगाया जा सकता। इस सिद्धांत ने पुनर्निवेशन (Feedback) जैसी धारणाओं को शामिल कर अपने आपको गतिशील सिद्धांत के रूप में पेश किया है। इसने किसी खास राजनीतिक व्यवस्था के साथ अपने को आबद्ध करने से बचाकर तुलनात्मक विश्लेषण को नयी अन्तर्दृष्टि प्रदान की है।

Dr. Akhlakh Ahmad